



Vihanshi jain Gangwal

28 Jan 2026

11:39 AM

Ranchi

Model: Web-MyKundli

Order No: 121591101

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: स्त्रीलिंग
जन्म तिथि _____: 28/01/2026
दिन _____: बुधवार
जन्म समय _____: 11:39:00 घंटे
इष्ट _____: 12:50:55 घटी
स्थान _____: Ranchi
राज्य _____: Bihar
देश _____: India

अक्षांश _____: 23:22:00 उत्तर
रेखांश _____: 85:20:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: 00:11:20 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 11:50:20 घंटे
वेलान्तर _____: -00:12:54 घंटे
साम्पातिक काल _____: 20:20:26 घंटे
सूर्योदय _____: 06:30:37 घंटे
सूर्यास्त _____: 17:32:49 घंटे
दिनमान _____: 11:02:12 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: शिशिर
सूर्य के अंश _____: 14:06:02 मकर
लग्न के अंश _____: 20:36:06 मेष

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: मेष - मंगल
राशि-स्वामी _____: वृष - शुक्र
नक्षत्र-चरण _____: रोहिणी - 1
नक्षत्र स्वामी _____: चन्द्र
योग _____: ब्रह्म
करण _____: गर
गण _____: मनुष्य
योनि _____: सर्प
नाड़ी _____: अन्त्य
वर्ण _____: वैश्य
वश्य _____: चतुष्पाद
वर्ग _____: गरुड़
युँजा _____: पूर्व
हंसक _____: भूमि
जन्म नामाक्षर _____: ओ-ओमवती
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: रजत - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: कुम्भ

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1947	माघ	8
पंजाबी	संवत : 2082	माघ	15
बंगाली	सन् : 1432	माघ	14
तमिल	संवत : 2082	थई	15
केरल	कोल्लम : 1201	मकरम	14
नेपाली	संवत : 2082	माघ	15
चैत्रादि	संवत : 2082	माघ	शुक्ल 10
कार्तिकादि	संवत : 2082	माघ	शुक्ल 10

पंचांग

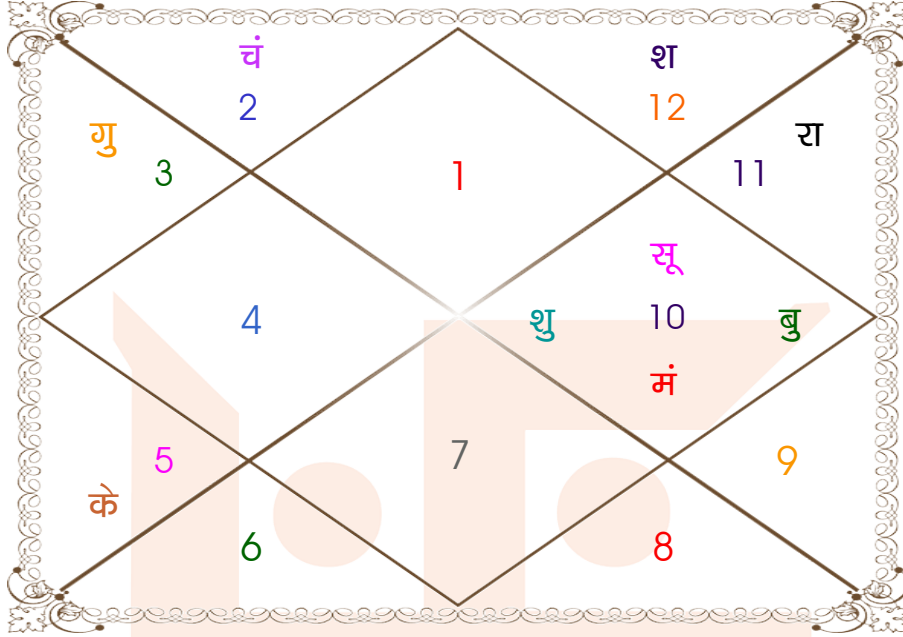
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 10
तिथि समाप्ति काल _____ : 16:36:18
जन्म तिथि _____ : 10
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : कृतिका
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 09:26:51 घंटे
जन्म योग _____ : रोहिणी
सूर्योदय कालीन योग _____ : ब्रह्म
योग समाप्ति काल _____ : 23:53:50 घंटे
जन्म योग _____ : ब्रह्म
सूर्योदय कालीन करण _____ : गर
करण समाप्ति काल _____ : 16:36:18 घंटे
जन्म करण _____ : गर
भयात _____ : 05:30:22
भभोग _____ : 55:11:53
भोग्य दशा काल _____ : चंद्र 9 वर्ष 0 मा 2 दि

घात चक्र

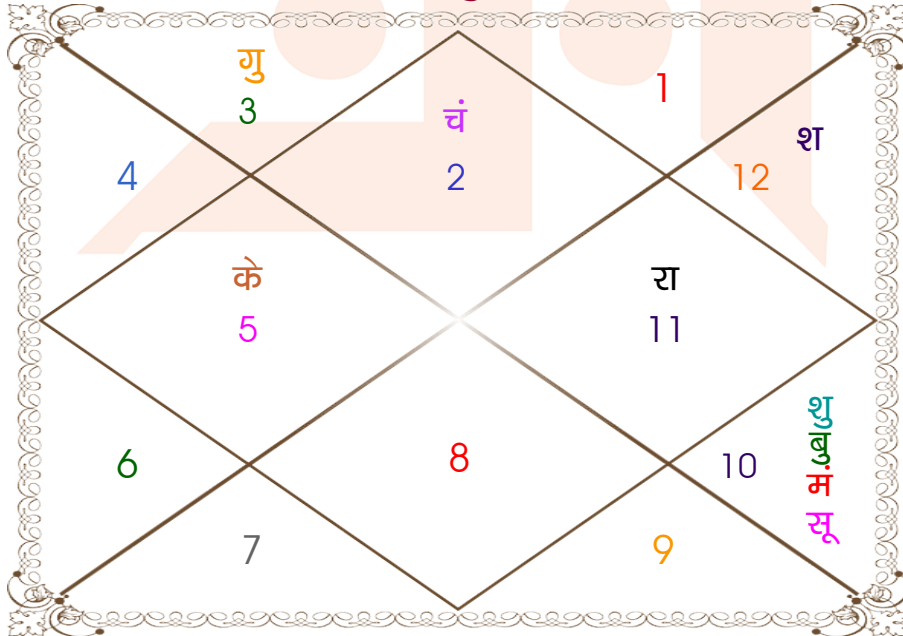
मास _____ : मार्गशीर्ष
तिथि _____ : 5-10-15
दिन _____ : शनिवार
नक्षत्र _____ : हस्त
योग _____ : शुक्ल
करण _____ : शकुनि
प्रहर _____ : 4
वर्ग _____ : सर्प
लग्न _____ : वृष
सूर्य _____ : वृश्चिक
चन्द्र _____ : धनु
मंगल _____ : धनु
बुध _____ : कन्या
गुरु _____ : मकर
शुक्र _____ : मकर
शनि _____ : तुला
राहु _____ : मकर

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

श	ल	चं	गु
रा			
शु म सू बु			के

लग्न कुंडली

चं	ल	श
गु		रा
		मं सू शु बु
के		

विंशोत्तरी
चन्द्र 9वर्ष 0मा 2दि
चन्द्र

28/01/2026

31/01/2145

चन्द्र	31/01/2035
मंगल	30/01/2042
राहु	31/01/2060
गुरु	31/01/2076
शनि	31/01/2095
बुध	01/02/2112
केतु	01/02/2119
शुक्र	01/02/2139
सूर्य	31/01/2145

योगिनी

सिद्धा 6वर्ष 3मा 19दि
सिद्धा

28/01/2026

19/05/2032

सिद्धा	28/09/2026
संकटा	18/04/2028
मंगला	28/06/2028
पिंगला	17/11/2028
धान्या	18/06/2029
भामरी	29/03/2030
भद्रिका	20/03/2031
उल्का	19/05/2032

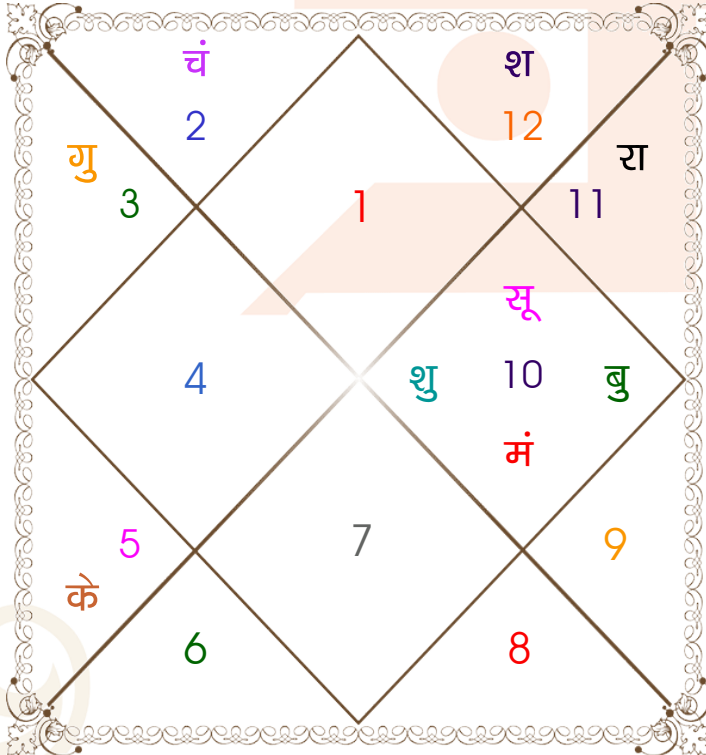
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मेष	20:36:06	420:48:14	भरणी	3	2	मंगल	शुक्र	गुरु	---
सूर्य			मक	14:06:02	01:00:57	श्रवण	2	22	शनि	चंद्र	गुरु	शत्रु राशि
चंद्र			वृष	11:19:30	14:26:41	रोहिणी	1	4	शुक्र	चंद्र	मंगल	मूलत्रिकोण
मंगल	अ		मक	09:34:37	00:46:53	उत्तराषाढ़ा	4	21	शनि	सूर्य	शुक्र	उच्च राशि
बुध	अ		मक	18:40:51	01:44:28	श्रवण	3	22	शनि	चंद्र	बुध	सम राशि
गुरु	व		मिथु	23:34:06	00:07:07	पुनर्वसु	2	7	बुध	गुरु	शनि	शत्रु राशि
शुक्र	अ		मक	19:15:20	01:15:20	श्रवण	3	22	शनि	चंद्र	बुध	मित्र राशि
शनि			मीन	04:03:22	00:05:40	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	शनि	सम राशि
राहु	व		कुंभ	15:08:34	00:03:04	शतभिषा	3	24	शनि	राहु	केतु	मित्र राशि
केतु	व		सिंह	15:08:34	00:03:04	पू०फाल्गुनी	1	11	सूर्य	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि
हर्ष	व		वृष	03:15:25	00:00:22	कृतिका	2	3	शुक्र	सूर्य	शनि	---
नेप			मीन	05:48:58	00:01:34	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	बुध	---
प्लूटो			मक	09:21:15	00:01:55	उत्तराषाढ़ा	4	21	शनि	सूर्य	शुक्र	---
दशम भाव			मक	08:36:07	--	उत्तराषाढ़ा	--	21	शनि	सूर्य	शुक्र	--

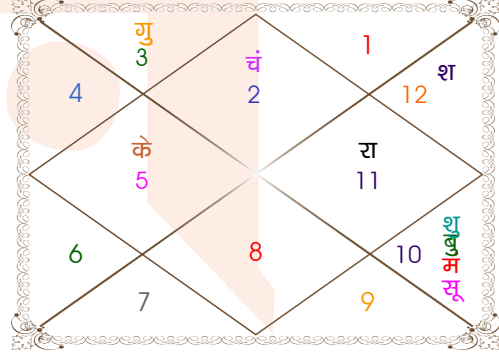
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:13:23

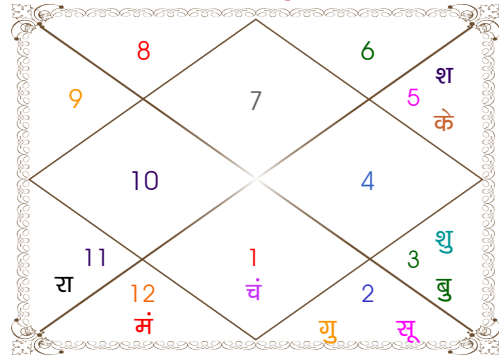
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मेष 03:36:06	मेष 20:36:06
2	वृष 03:36:06	वृष 16:36:06
3	वृष 29:36:06	मिथुन 12:36:07
4	मिथुन 25:36:07	कर्क 08:36:07
5	कर्क 25:36:07	सिंह 12:36:07
6	सिंह 29:36:06	कन्या 16:36:06
7	तुला 03:36:06	तुला 20:36:06
8	वृश्चिक 03:36:06	वृश्चिक 16:36:06
9	वृश्चिक 29:36:06	धनु 12:36:07
10	धनु 25:36:07	मकर 08:36:07
11	मकर 25:36:07	कुम्भ 12:36:07
12	कुम्भ 29:36:06	मीन 16:36:06

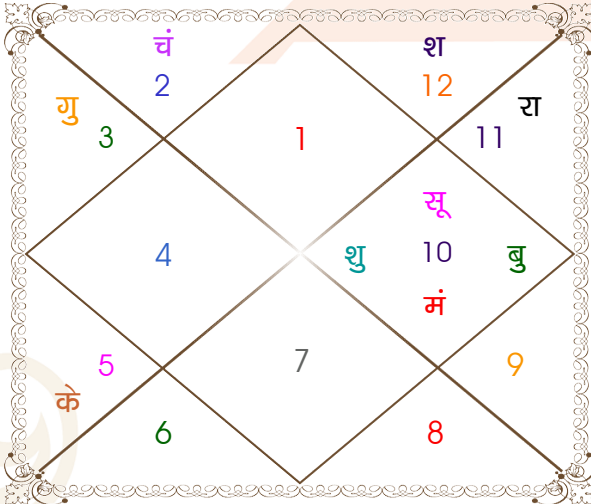
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मेष	20:36:06
2	वृष	19:07:48
3	मिथुन	13:44:20
4	कर्क	08:36:07
5	सिंह	07:16:13
6	कन्या	12:08:12
7	तुला	20:36:06
8	वृश्चिक	19:07:48
9	धनु	13:44:20
10	मकर	08:36:07
11	कुम्भ	07:16:13
12	मीन	12:08:12

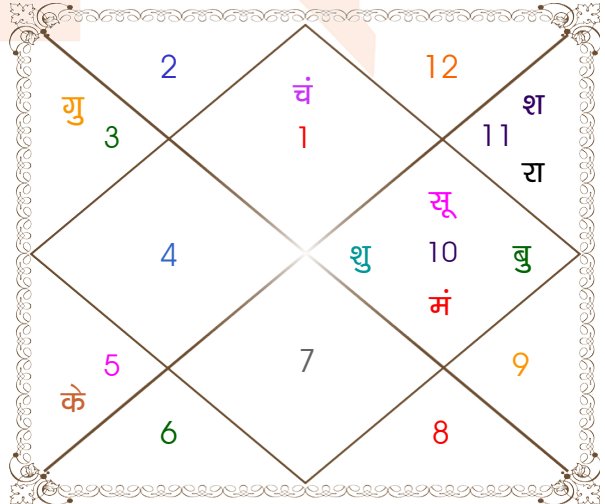
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा
हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका

चलित कुंडली



भाव कुंडली



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : चन्द्र 9 वर्ष 0 मास 2 दिन

चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष
28/01/2026	31/01/2035	30/01/2042	31/01/2060	31/01/2076
31/01/2035	30/01/2042	31/01/2060	31/01/2076	31/01/2095
28/01/2026	मंगल 29/06/2035	राहु 12/10/2044	गुरु 20/03/2062	शनि 03/02/2079
मंगल 01/07/2026	राहु 16/07/2036	गुरु 08/03/2047	शनि 30/09/2064	बुध 13/10/2081
राहु 31/12/2027	गुरु 22/06/2037	शनि 12/01/2050	बुध 06/01/2067	केतु 22/11/2082
गुरु 01/05/2029	शनि 01/08/2038	बुध 31/07/2052	केतु 13/12/2067	शुक्र 21/01/2086
शनि 01/12/2030	बुध 29/07/2039	केतु 19/08/2053	शुक्र 13/08/2070	सूर्य 03/01/2087
बुध 01/05/2032	केतु 25/12/2039	शुक्र 19/08/2056	सूर्य 01/06/2071	चंद्र 03/08/2088
केतु 30/11/2032	शुक्र 23/02/2041	सूर्य 13/07/2057	चंद्र 30/09/2072	मंगल 12/09/2089
शुक्र 01/08/2034	सूर्य 01/07/2041	चंद्र 12/01/2059	मंगल 06/09/2073	राहु 19/07/2092
सूर्य 31/01/2035	चंद्र 30/01/2042	मंगल 31/01/2060	राहु 31/01/2076	गुरु 31/01/2095

बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष
31/01/2095	01/02/2112	01/02/2119	01/02/2139	31/01/2145
01/02/2112	01/02/2119	01/02/2139	31/01/2145	00/00/0000
बुध 28/06/2097	केतु 29/06/2112	शुक्र 02/06/2122	सूर्य 21/05/2139	चंद्र 01/12/2145
केतु 25/06/2098	शुक्र 29/08/2113	सूर्य 02/06/2123	चंद्र 20/11/2139	मंगल 29/01/2146
शुक्र 26/04/2101	सूर्य 04/01/2114	चंद्र 31/01/2125	मंगल 27/03/2140	00/00/0000
सूर्य 03/03/2102	चंद्र 05/08/2114	मंगल 02/04/2126	राहु 18/02/2141	00/00/0000
चंद्र 02/08/2103	मंगल 01/01/2115	राहु 02/04/2129	गुरु 07/12/2141	00/00/0000
मंगल 29/07/2104	राहु 20/01/2116	गुरु 02/12/2131	शनि 19/11/2142	00/00/0000
राहु 16/02/2107	गुरु 25/12/2116	शनि 01/02/2135	बुध 26/09/2143	00/00/0000
गुरु 24/05/2109	शनि 03/02/2118	बुध 01/12/2137	केतु 01/02/2144	00/00/0000
शनि 01/02/2112	बुध 01/02/2119	केतु 01/02/2139	शुक्र 31/01/2145	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल चंद्र 9 वर्ष 0 मा 1 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - मंगल	चंद्र - राहु	चंद्र - गुरु	चंद्र - शनि	चंद्र - बुध
28/01/2026	01/07/2026	31/12/2027	01/05/2029	01/12/2030
01/07/2026	31/12/2027	01/05/2029	01/12/2030	01/05/2032
00/00/0000	राहु 22/09/2026	गुरु 05/03/2028	शनि 01/08/2029	बुध 12/02/2031
28/01/2026	गुरु 04/12/2026	शनि 21/05/2028	बुध 22/10/2029	केतु 14/03/2031
गुरु 11/02/2026	शनि 28/02/2027	बुध 29/07/2028	केतु 25/11/2029	शुक्र 08/06/2031
शनि 17/03/2026	बुध 17/05/2027	केतु 27/08/2028	शुक्र 01/03/2030	सूर्य 04/07/2031
बुध 16/04/2026	केतु 18/06/2027	शुक्र 16/11/2028	सूर्य 30/03/2030	चंद्र 16/08/2031
केतु 29/04/2026	शुक्र 17/09/2027	सूर्य 10/12/2028	चंद्र 17/05/2030	मंगल 16/09/2031
शुक्र 03/06/2026	सूर्य 15/10/2027	चंद्र 20/01/2029	मंगल 20/06/2030	राहु 02/12/2031
सूर्य 14/06/2026	चंद्र 29/11/2027	मंगल 17/02/2029	राहु 15/09/2030	गुरु 09/02/2032
चंद्र 01/07/2026	मंगल 31/12/2027	राहु 01/05/2029	गुरु 01/12/2030	शनि 01/05/2032
चंद्र - केतु	चंद्र - शुक्र	चंद्र - सूर्य	मंगल - मंगल	मंगल - राहु
01/05/2032	30/11/2032	01/08/2034	31/01/2035	29/06/2035
30/11/2032	01/08/2034	31/01/2035	29/06/2035	16/07/2036
केतु 14/05/2032	शुक्र 12/03/2033	सूर्य 10/08/2034	मंगल 08/02/2035	राहु 25/08/2035
शुक्र 18/06/2032	सूर्य 11/04/2033	चंद्र 25/08/2034	राहु 03/03/2035	गुरु 15/10/2035
सूर्य 29/06/2032	चंद्र 01/06/2033	मंगल 05/09/2034	गुरु 22/03/2035	शनि 15/12/2035
चंद्र 16/07/2032	मंगल 06/07/2033	राहु 02/10/2034	शनि 15/04/2035	बुध 07/02/2036
मंगल 29/07/2032	राहु 06/10/2033	गुरु 27/10/2034	बुध 06/05/2035	केतु 01/03/2036
राहु 30/08/2032	गुरु 26/12/2033	शनि 25/11/2034	केतु 15/05/2035	शुक्र 04/05/2036
गुरु 27/09/2032	शनि 01/04/2034	बुध 20/12/2034	शुक्र 09/06/2035	सूर्य 23/05/2036
शनि 31/10/2032	बुध 26/06/2034	केतु 31/12/2034	सूर्य 16/06/2035	चंद्र 24/06/2036
बुध 30/11/2032	केतु 01/08/2034	शुक्र 31/01/2035	चंद्र 29/06/2035	मंगल 16/07/2036
मंगल - गुरु	मंगल - शनि	मंगल - बुध	मंगल - केतु	मंगल - शुक्र
16/07/2036	22/06/2037	01/08/2038	29/07/2039	25/12/2039
22/06/2037	01/08/2038	29/07/2039	25/12/2039	23/02/2041
गुरु 31/08/2036	शनि 25/08/2037	बुध 21/09/2038	केतु 07/08/2039	शुक्र 05/03/2040
शनि 24/10/2036	बुध 22/10/2037	केतु 12/10/2038	शुक्र 01/09/2039	सूर्य 27/03/2040
बुध 11/12/2036	केतु 14/11/2037	शुक्र 12/12/2038	सूर्य 08/09/2039	चंद्र 01/05/2040
केतु 31/12/2036	शुक्र 21/01/2038	सूर्य 30/12/2038	चंद्र 21/09/2039	मंगल 26/05/2040
शुक्र 26/02/2037	सूर्य 10/02/2038	चंद्र 29/01/2039	मंगल 29/09/2039	राहु 29/07/2040
सूर्य 15/03/2037	चंद्र 16/03/2038	मंगल 19/02/2039	राहु 22/10/2039	गुरु 24/09/2040
चंद्र 12/04/2037	मंगल 08/04/2038	राहु 14/04/2039	गुरु 10/11/2039	शनि 30/11/2040
मंगल 02/05/2037	राहु 08/06/2038	गुरु 02/06/2039	शनि 04/12/2039	बुध 30/01/2041
राहु 22/06/2037	गुरु 01/08/2038	शनि 29/07/2039	बुध 25/12/2039	केतु 23/02/2041

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

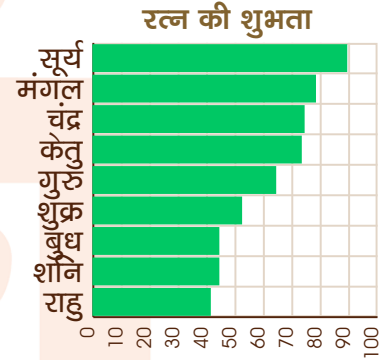
मूलांक	1
भाग्यांक	3
मित्र अंक	1, 4, 8, 9, 3
शत्रु अंक	5, 6
शुभ वर्ष	19,28,37,46,55
शुभ दिन	गुरु, रवि, मंगल
शुभ ग्रह	गुरु, सूर्य, मंगल
मित्र राशि	मकर, कुम्भ
मित्र लग्न	कर्क, धनु, कुम्भ
अनुकूल देवता	विष्णु
शुभ रत्न	मूंगा
शुभ उपरत्न	संगमूंगी
भाग्य रत्न	पुखराज
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	रक्त
शुभ दिशा	दक्षिण
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन
दान अन्न	मल्का
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
माणिक्य	सूर्य	89%	व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख
मूंगा	मंगल	78%	व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य, दुर्घटना से बचाव
मोती	चंद्र	74%	धन, सुख
लहसुनिया	केतु	73%	सन्तति सुख, व्यावसायिक उन्नति
पुखराज	गुरु	64%	पराक्रम, भाग्योदय, कम खर्च
हीरा	शुक्र	52%	व्यावसायिक उन्नति, धन, दम्पति
पन्ना	बुध	44%	व्यावसायिक हानि, पराक्रम हानि, शत्रु व रोग
नीलम	शनि	44%	व्यय, व्यावसायिक हानि, हानि
गोमेद	राहु	41%	हानि, व्यय



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
चंद्र	31/01/2035	95%	86%	78%	53%	64%	52%	44%	16%	61%
मंगल	30/01/2042	95%	80%	91%	19%	70%	52%	44%	16%	80%
राहु	31/01/2060	77%	61%	66%	44%	64%	58%	53%	58%	61%
गुरु	31/01/2076	95%	80%	84%	19%	77%	28%	44%	41%	73%
शनि	31/01/2095	77%	61%	66%	53%	64%	58%	59%	52%	61%
बुध	01/02/2112	95%	61%	78%	59%	64%	58%	44%	41%	73%
केतु	01/02/2119	77%	61%	84%	44%	64%	58%	19%	16%	86%
शुक्र	01/02/2139	77%	61%	78%	53%	64%	64%	53%	52%	80%
सूर्य	31/01/2145	100%	80%	84%	44%	70%	28%	19%	16%	61%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	-----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	16/01/2076-11/07/2076	11/10/2076-15/01/2079	-----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	21/05/2086-21/05/2086	08/02/2087-18/07/2088	31/10/2088-05/04/2089
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	18/07/2088-31/10/2088	05/04/2089-19/09/2090	25/10/2090-21/05/2091
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	19/09/2090-25/10/2090	21/05/2091-02/07/2093	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	18/08/2095-11/10/2097	02/05/2098-20/06/2098	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/11/2105-25/02/2108	29/07/2108-23/11/2108	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया

फल

अशुभ
शुभ
शुभ
सम
शुभ

क्षेत्र

बुरा स्वास्थ्य
धन
पराक्रम
सन्तति कष्ट
भाग्योदय

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति दशम भाव है। दशम भाव कर्म का मुख्य प्रतिनिधि भाव है। अतः इसके प्रभाव से आप एक कर्मठ एवं पराकमी महिला होंगी तथा अपने कार्य क्षेत्र में हमेशा उन्नतिशील रहेंगी। साथ ही अपनी बुद्धि एवं योग्यता के बल पर आप (या आपके पति) किसी उच्च प्रशासनिक पद, इंजीनियरिंग, मेडिकल अथवा होटल प्रबन्ध आदि के क्षेत्र में विशिष्ट सफलता अर्जित करेंगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे जिससे समाज में आप एक आदरणीया महिला समझी जाएंगी। आप अपने कार्यों से विशिष्ट सम्मान या उपलब्धि भी अर्जित कर सकती हैं। जिससे आपकी ख्याति भी दूर दूर तक फैलेगी। पिता के सुख एवं स्वास्थ्य के लिए यह स्थिति मध्यम रहेगी। तथापि वे भी समाज में आदरणीय रहेंगे तथा उनकी सेवा तथा सुख प्रदान करने में आप हमेशा तत्पर रहेंगी।

दशम भाव से मंगल की दृष्टि प्रथम भाव पर रहेगी इसके प्रभाव से आप यदा कदा पित या गर्मी आदि से कष्ट की अनुभूति कर सकती हैं लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। सामान्यतया आप उत्साह एवं परिश्रम पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगी। चतुर्थ भाव पर सप्तम दृष्टि के प्रभाव से आप जीवन में आवश्यक सुख संसाधनों को अर्जित करेंगी। सुख पूर्वक उनका उपभोग भी करेंगी। जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से भी आप युक्त रहेगी परन्तु माता का सुख एवं स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। आप अपनी ओर से उन्हें पूर्ण सुख एवं सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। पंचम भाव पर मंगल दृष्टि से संतति से सुख एवं सहयोग मध्यम रहेगा तथा संतति प्राप्ति में किंचित विलम्ब भी हो सकता है। यदा कदा बुद्धि में उग्रता का भाव भी उत्पन्न होगा लेकिन अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों को बुद्धिमत्ता पूर्वक सम्पन्न करेंगी। इसके अतिरिक्त सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपको लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा।

इस प्रकार दशमस्थ मंगल के प्रभाव से आप एक पराकमी एवं प्रभावी महिला होंगी तथा जीवन में धनऐश्वर्य एवं सुख संसाधनों से युक्त रहेगी। अतः आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा पारिवारिक जनों का आधुनिक परिवेश में पालन करने में आप समर्थ रहेंगी जिससे सभी लोग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। आपको सहयोग तथा सम्मान प्रदान करेंगे।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- नवम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में गुरु के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राह्मण और पति को दान दें । विद्यालय में पुस्तकों का दान करें ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है । संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों ।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



ग्रह फल

सूर्य

दशमभाव में सूर्य हो तो जातक-प्रतापी, व्यवसाय कुशल, राजमान्य लब्ध-प्रतिष्ठ, राजमन्त्री, उदार, ऐश्वर्य सम्पन्न एवं लोकमान्य होता है।

मकर राशि में रवि हो तो जातक बहुभाषी, चंचल, झगड़ालू, दुराचारी, लोभी एवं परिश्रमी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी पूर्ण रहेगी। धनैश्वर्य से वे सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में आपको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही आपके आजीविका या व्यापार संबंधी कार्य भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहायता से सम्पन्न होंगे एवं आप इन कार्यों में वांछित सफलता अर्जित कर सकेंगी।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध प्रायः मधुर ही रहेंगे तथापि यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। जीवन में आप पिता को अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक सहायता प्रदान करेंगी एवं सुख दुःख में सर्वदा उनका सहयोग करेंगी।

चन्द्र

द्वितीयभाव में चन्द्रमा हो तो जातक परदेशवासी, भोगी, सुन्दर मधुरभाषी, भाग्यवान्, सहनशील एवं शान्तिप्रिय होता है।

वृष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सुन्दर प्रसन्नचित्तवाला, कामी, दान करने वाला, अधिक कन्या सन्तति वाला, शान्त, कफरोगी, सुखी, कुशा बुद्धिवाला, सुगठित शरीरवाला, धनी, सन्तोषी, चंचलमन, परलिंगी के प्रति आकर्षण, खाने-पीने का शौकीन एवं लोकप्रिय होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपके शुभ प्रभाव से उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनकी पूर्ण वात्सल्य भावना रहेगी तथा जीवन में विद्य अध्ययन या धन संबंधी कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही उनसे आप अवसरानुकूल महत्वपूर्ण नैतिक शिक्षा भी ग्रहण करेंगी। इसके साथ ही वे आपको हार्दिक सहयोग देंगी। इस प्रकार आपके परस्पर संबंध भी अच्छे रहेंगे।

आप भी उनसे पूर्ण प्रभावित रहेंगी तथा उनके कथनानुसार ही अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगी। साथ ही जीवन में उनकी सेवा तथा वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से आप उनकी सहायता करती रहेंगी। अतः परस्पर मधुर संबंध एवं विश्वास होने के कारण आप आनन्दपूर्वक जीवन में उनका स्नेह प्राप्त करती रहेंगी।

मंगल

दसवें भाव में मंगल हो तो जातक कुलदीपक, स्वाभिमानी, सन्तति कष्टवाला, धनवान्, सुखी, उत्तम-वाहनों से सुखी एवं यशस्वी होता है।

मकर राशि में मंगल हो तो जातक ख्यातिप्राप्त, पराकामी, नेता ऐश्वर्यशाली, सुखी, सेनापति, उच्चपुलिस अधिकारी, प्रशासक, प्रचुर सन्तान, उदार, परिश्रमी एवं महत्वाकांक्षी होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा उनमें शारीरिक दुर्बलता भी परिलक्षित होगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त महत्वपूर्ण कार्य की सिद्धि में आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी वे आपके साथ रहेंगे। तथा नौकरी या व्यापारादि में आपका सहयोग करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति स्नेह का भाव रहेगा एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी। लेकिन कभी कभी आपसी मतभेदों के कारण इसमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अल्प समय तक रहेगी। साथ ही आप उनकी आजीविका संबंधी कार्यों में यथाशक्ति आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करती रहेंगी।

बुध

दशमभाव में बुध हो तो जातक सत्यवादी, मनस्वी, व्यवहार कुशल, लोकमान्य, विद्वान, लेखक, कवि जमींदार, मातृ-पितृ भक्त, राजमान्य, न्यायी एवं भाग्यवान् होता है।

मकर राशि में बुध हो तो जातक कुलहीन, दुश्शील, मिथ्याभाषी, ऋणी, मूर्ख, डरपोक, व्यापार में रुचि लेने वाला, किफायतसार, चतुर एवं परिश्रमी होता है।

गुरु

तृतीयभाव में गुरु हो तो जातक शास्त्रज्ञ, जितेन्द्रिय, लेखक, कामी, प्रवासी, स्त्रीप्रिय, व्यवसायी, मन्दाग्नि, वाहनयुक्त, पर्यटनशील, विदेशप्रिय, ऐश्वर्यवान् बहुत भाई बहन, आस्तिक एवं योगी होता है।

मिथुन राशि में गुरु हो तो जातक योग्य वक्ता, सुगठित शरीर, लम्बाकद, उदार, विद्वान, कई भाषाओं का जानने वाला, अनायास धनप्राप्त करने वाला, लोकमान्य, लेखक एवं व्यवहार कुशल होता है।

शुक्र

दशम भाव में शुक्र हो तो जातक गुणवान्, दायालु, विलासी, ऐश्वर्यवान्, भाग्यवान्, न्यायवान् विजयी, गानप्रिय, धार्मिक ज्योतिषी एवं लोभी होता है।

मकर राशि में शुक्र हो तो जातक बलहीन, कृपण, ध्यरोगी, दुखी, मानी, नीच जाति की स्त्रियों में रुचि, सिद्धान्तहीन एवं अनैतिक चरित्र होता है।

शनि

बारहवें भाव में शनि हो तो जातक आलसी, दुष्ट, व्यसनी, व्यर्थ व्यय करने वाला, अपस्मार, उन्माद का रोगी, मातुलकष्टदायक, अविश्वासी एवं कटुभाषी होता है।

मीन राशि में शनि हो तो जातक अविचारी, शिल्पकार हतोत्साही, धनी, प्रसिद्ध, सुखी एवं दूसरों की सहायता करने वाला होता है।

राहु

ग्यारहवें भाव में राहु हो तो जातक परिश्रमी, अल्पसन्तान, विदेशियों से धनलाभ, दीर्घायु, मन्दमति, लाभहीन, अरिष्टनाशक, व्यवसाययुक्त, कदाचित् लाभदायक एवं कार्य सफल करने वाला होता है।

कुम्भ राशि में राहु हो तो जातक विद्वान्, लेखक मितभाषी एवं मितव्ययी होता है।

केतु

पंचम भाव में केतु हो तो जातक वातरोगी, कुचाली, कुबुद्धि, सन्तान को नष्ट करता है, योगी, कुशाग्रबुद्धि एवं क्रोधी होता है।

सिंह राशि में केतु हो तो जातक बहुभाषी, डरपोक, असहिष्णु, सर्पदशन का भय एवं असन्तोषी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- चन्द्र
(28/01/2026 - 31/01/2035)

चन्द्र की महादशा की अवधि दस वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह दशा 28/01/2026 को आरम्भ और 31/01/2035 को समाप्त होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में चन्द्र द्वितीय भाव में अवस्थित है और द्वितीय भाव सम्पत्ति, लाभ, शक्ति और संसाधन, मूल्यवान वस्तुओं की प्राप्ति, बॉण्ड, शेयर, दायीं आँख, कल्पनाशक्ति, जीभ, दाँत तथा पारिवारिक सदस्यों का सूचक है। वर्षों की यह अवधि आपके लिए सुख और सम्पत्ति की दृष्टि से उत्तम होगी।

स्वास्थ्य :

चन्द्र कर्क में अवस्थित है जो उसका अपना भाव है। इसलिए इस अवधि में आपके स्वास्थ्य से सम्बन्धित कोई अनपेक्षित प्रतिकूल घटना नहीं घटेगी और न ही कोई समस्या अथवा दुर्घटना होगी। आप स्वयं को शक्तिशाली अनुभव करेंगे और अपने कार्यों को सुंदर ढंग से पूरा करने में समर्थ होंगे।

अर्थ और सम्पत्ति :

चन्द्र द्वितीय भाव में अवस्थित है जो धन और आर्थिक मामलों का भाव है। चन्द्र की इस स्थिति के कारण आपकी सम्पत्ति और बैंक बैलेंस में वृद्धि होगी। दस वर्षों की इस अवधि में आप बहुत अधिक धनोपार्जन करेंगे और अपने बैंक बैलेंस में वृद्धि करेंगे। इस दशा में धनोपार्जन और चल-अचल सम्पत्तियों में वृद्धि की संभावनाएं हैं जिससे आगे भी बहुमुखी वृद्धि होगी। स्त्री वर्ग से धन की प्राप्ति होगी। आपकी आर्थिक स्थिति परिवर्तनशील होगी।

व्यवसाय :

चन्द्र दशा की अवधि में आप अपनी स्थिति और कार्य से संतुष्ट होंगे।

अगर आप सेवा में हैं तो आपकी उच्च पद पर पदोन्नति होगी और यदि व्यवसाय में हैं तो व्यवसाय के विस्तार व नये कार्य मिलने के संकेत हैं। नये रचनात्मक विचार आप के मस्तिष्क में उभरेंगे जिसकी आपके सहकर्मी और उच्चाधिकारी सराहना करेंगे और ऐसे कार्य जीवन में आगे बढ़ने में सहायक होंगे। वास्तव में चन्द्र आपके व्यवसाय में आपकी स्थिति सुदृढ़ करेगा।

पारिवारिक जीवन :

चंद्र के मस्तिष्क और माता का कारक होने के कारण आपको सुख, प्रतिष्ठा और उत्तम पारिवारिक जीवन की प्राप्ति होगी। खासकर आपकी माता आपके दैनिक जीवन में अत्यधिक सहायक होंगी। पिता भी आपकी सहायता करेंगे। बच्चे आज्ञाकारी होंगे और परिवार में वातावरण सामान्यतया सौहार्द्रपूर्ण रहेगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

उच्चतर शिक्षा की ओर आपकी प्रवृत्ति अधिक होगी और यदि आप किसी प्रतियोगिता परीक्षा में शामिल हों तो सफल होंगे।



**अंतर्दशा :- चन्द्र - चन्द्र
(28/01/2026 - 28/01/2026)**

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष रहेगी। आपके लिए यह 28/01/2026 को प्रारंभ होकर 31/01/2035 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र की अंतर्दशा की अवधि 10 मास रहेगी। आपके लिए यह 28/01/2026 को प्रारंभ होकर 28/01/2026 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्रिका में द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ-हानि, सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत, परिवार के सदस्यों का प्रतिनिधि है।

इस अवधि में आप उत्तम वस्तुओं का चयन करेंगे; वाणी मधुर रहेगी। व्यापार और जीवन में सफलता प्राप्त होगी। मधुर स्वभाव के कारण धन कमाएंगे। सुरुचि और सुस्वभाव के कारण विपरीत लिंग के व्यक्तियों से संबंध प्रगाढ़ बनेंगे। आप उनके अधिपत्य को स्वीकार कर सकते हैं।

अरिष्ट से बचाव के लिए चंद्र के मंत्र के 11000 जाप करें।

**अंतर्दशा :- चन्द्र - मंगल
(28/01/2026 - 01/07/2026)**

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 28/01/2026 को प्रारंभ होकर 31/01/2035 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 7 मास होगी। आपके लिए यह 28/01/2026 को प्रारंभ होकर 01/07/2026 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्रिका के दशम भाव में स्थित होकर 1, 4 और 5 भावों पर दृष्टि डाल रहा है। इस अंतर्दशा की अवधि में आप खूब धन कमाएंगे और धनवान बन जाएंगे। आपका दबदबा अच्छा रहेगा और प्रबंधन में सख्त कदम उठाएंगे।

आप दक्ष कारीगर बन सकते हैं, अधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे। आप स्वयं उच्चपद पर आसीन हो सकते हैं। संतान की संख्या कम हो सकती है या संतानरहित हो सकते हैं।

शुभत्व में वृद्धि के लिए प्रातःकाल हनुमान जी की पूजा कर 6 रत्ती का मूंगा सोने की अंगूठी में, कच्चे दूध से धोकर, दायें हाथ की कनिष्ठिका में हनुमान चालीसा 108 बार पढ़ कर धारण करें।

**अंतर्दशा :- चन्द्र - राहु
(01/07/2026 - 31/12/2027)**

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह महादशा 28/01/2026 को प्रारंभ हुई और 31/01/2035 को समाप्त होगी। चंद्र महादशा में राहु की अंतर्दशा की अवधि 18 मास रहेगी। आपके लिए यह 01/07/2026 को प्रारंभ होकर 31/12/2027 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्रिका के एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। राहु छाया ग्रह है जो अस्तित्वहीन है मगर ग्रहों के समान प्रभावशाली है। इसका शुभत्व इसके निवास और युत ग्रह के अनुसार होता है।

इस अवधि में आप प्रसिद्ध, धनवान और ज्ञानी बनेंगे। अपने कार्यक्षेत्र में विशिष्ट बनेंगे। धन कमाने के लिए विदेश जा सकते हैं। कान के रोगों से बचाव करें।

अरिष्ट से बचाव के लिए राहु के वैदिक मंत्र के 18000 जाप करें।

**अंतर्दशा :- चन्द्र - गुरु
(31/12/2027 - 01/05/2029)**

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 28/01/2026 को प्रारंभ हुई। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा की अवधि 16 मास है। यह आपके लिए 31/12/2027 को प्रारंभ होकर 01/05/2029 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्रिका के तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है। बृहस्पति शुभ ग्रह है। तृतीय भाव में स्थित होकर बृहस्पति कुंडली के 7, 9, 11 भावों पर दृष्टि डाल रहा है।

इस अवधि में आपका मष्तिष्क आशावादी रहेगा। दर्शनशास्त्र में रुचि होगी। परिवारजनों में आसक्ति कम होगी। मित्रों से दूरी बढ़ सकती है, इस विषय में सावधानी आवश्यक है।

शुभत्व में वृद्धि के लिए बृहस्पति के तांत्रिक मंत्र के 70,000 जाप करें।

**अंतर्दशा :- चन्द्र - शनि
(01/05/2029 - 01/12/2030)**

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इस महादशा में शनि की अंतर्दशा 1 वर्ष 7 मास रहेगी। आपके लिए चंद्र महादशा 28/01/2026 को प्रारंभ हुई और 31/01/2035 को समाप्त होगी। शनि अंतर्दशा 01/05/2029 को प्रारंभ होकर 01/12/2030 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्रिका के द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है। शनि बहुत शक्तिशाली ग्रह है जो जातक की कर्मदता की परीक्षा लेता है। भाग्योदय में देरी हो सकती है, मगर होता जरूर है।

इस अवधि में आपकी बुद्धि की कुशाग्रता कम हो सकती है। बहुत सावधानी की आवश्यकता है क्योंकि व्यापार आदि में धनहानि हो सकती है। शत्रु बढेंगे, निराशा अधिक रहेगी। गुप्त रूप से पाप करने की प्रवृत्ति हो सकती है।

अरिष्ट से बचाव के लिए मछलियों को आटे की गोलियां खिलाएं। भोजन का पहला कौर गाय को दें। शिव की उपासना कम से कम प्रत्येक शनिवार को अवश्य करें।

**अंतर्दशा :- चन्द्र - बुध
(01/12/2030 - 01/05/2032)**

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इस महादशा में बुध की अंतर्दशा 1 वर्ष 5 मास रहेगी।

आपके लिए चंद्र महादशा 28/01/2026 को प्रारंभ हुई थी और 31/01/2035 को समाप्त होगी। इसमें बुध की अंतर्दशा 01/12/2030 को प्रारंभ होकर 01/05/2032 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्रिका के दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है। दशम भाव में स्थित होकर बुध कुंडली के चतुर्थ भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व पर प्रभावी हो रहा है। इस अंतर्दशा की अवधि में आप शिक्षा-दीक्षा में उत्तम प्रगति करेंगे। आपको प्रसिद्धि और प्रसन्नता प्राप्त होंगी। दान-धर्म में रुचि होगी। व्यापार में उन्नति होगी। अध्यात्म में दिलचस्पी बढ़ेगी। हर कार्य में सफलता मिलेगी। नेत्रों के रोगों से बचाव करें।

शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध के वैदिक मंत्र के 9000 जाप करें।